ओम् शान्ति। यह बच्चों की गारंटी वा प्रतिज्ञा है। प्रतिज्ञा कोई मुख से नहीं की जाती है। जब बच्चे बाप को पहचान लेते हैं तो प्रतिज्ञा हो ही जाती है। हर एक इनडिपेन्डेन्ट पुरुषार्थ करना है पद पाने लिए। स्कूल में सब इनडिपेन्डेन्ट पुरुषार्थ करते हैं कि हम ऊँच पद पावें। तो यहाँ आत्मा पढ़ती है और परमात्मा भी पढ़ाने लिए जीवाम्मा बनते हैं और इनमें प्रवेश कर इनको (ब्रह्मा) और ब्रह्मा मुखवंशावली को पढ़ाते हैं। स्वयं ब्रह्मा को मुखवंशावली नहीं कहेंगे। ब्राह्मण ब्रह्मा मुखवंशावली हैं। ब्रह्मा शिव की मुखवंशावली नहीं है। शिवबाबा तो आकर इनमें प्रवेश करते हैं, अपना बनाते हैं। यह भी क्रियेशन है। पहले ब्रह्मा को रचते हैं। विष्णु को पहले नहीं रचते। गाया भी जाता है ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। विष्णु, शंकर और ब्रह्मा नहीं गाया जाता। पहले ब्रह्मा को रचते हैं। ब्रह्मा का ऑक्युपेशन ही अलग है। यह हरेक बात समझने की है। इनको त्वमेव मात च पिता... कहा जाता है। तो वह तो निराकार है ना। तो साकार में मात–पिता चाहिए। तभी पूछते हैं मम्मा को मम्मा है? कहेंगे, हाँ। ब्रह्मा मम्मा की भी मम्मा है। ब्रह्मा की कोई मम्मा नहीं। यह मम्मा (ब्रह्मा) फीमेल न होने के कारण माता रूप में मम्मा चाहिए। तो ब्रह्मा की पुत्री सरस्वती। ब्रह्मा खुद मम्मा होते हुए, सरस्वती को मम्मा कहते हैं। बाप पढ़ाते हैं तो यह भी पढ़ते हैं। जैसे तुम स्टूडेंट हो वैसे यह। शिवबाबा कोई स्टूडेंट नहीं है। सभी समझेंगे और ब्रह्मा का मर्तबा देख भी रहे हो कि यह सबसे जास्ती पढ़ता है। देखते हो बरोबर; पर नजदीक है। पहले किसके कान सुनते हैं? यह ब्रह्मा नजदीक है तो कहेंगे कि मम्मा–बाबा जास्ती पढ़ते हैं, फिर नम्बरवार सभी बच्चे पढ़ते हैं। अपन को मियाँ–मिट्ठू भी न समझना है। भले ही बाबा कहें कि जगदीश बच्चा मम्मा–बाबा से अच्छा समझाता है। बाबा की मुरली पढ़ धारण कर फिर गीता, मैगजीन बनाता है; क्योंकि यह शास्त्र आदि पढ़ा हुआ है, अंग्रेजी में भी होशियार है। तो इसको कहा जाता रिगार्ड। स्टूडेंट को एक/दो का रिगार्ड रखना है। बाबा भी तो रिगार्ड रखते हैं ना। फादर को फॉलो करना चाहिए। भले ही अभी 16 कला सम्पूर्ण तो बने नहीं हैं। नम्बरवार तो होते ही हैं ना। कोई ना कोई भूलें सबसे होती रहती हैं; इसलिए अपन को मियाँ मिट्ठू न समझना है। जैसे कर्म बाप करते हैं मैं करूँगा, वह सब मुझे देख और रिगार्ड एक/दो का करेगा। तो बाबा को भी रिगार्ड रखना पड़ता है। तो बाबा कहते हैं ना, प्रकाश (तोता–मैना वाली) अच्छी है, पढ़ी–लिखी है, आर्यसमाजियों से टक्कर खा सकती है; क्योंकि आर्यसमाजियों की नॉलेज से वाकिफ है तो जज अच्छा कर सकती है कि वहाँ नॉलेज ऐसे, यहाँ ऐसे है। वहाँ पर कोई एम–ऑब्जेक्ट तो है नहीं। भले कहते हैं मुक्ति चाहिए; परन्तु जानते नहीं हैं। तो तुम्हारे में भी अच्छे–2 हैं, वह भी उनसे प्रश्न–उत्तर कर सकते हैं। अगर कोई कहे कि यह कहते हैं कि स्त्री–पुरुष भाई–बहन है तो अच्छा सेन्सीबुल बच्चा होगा वह झट कहेगा कि परमात्मा के बच्चे तो सब हैं ना तो भाई–2 ही ठहरे ना। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई–बहन हो गए ना। भाई–बहन बच्चा तो अच्छा है ना? बाप के बच्चे बनेंगे तो बाप से वर्सा ले सकेंगे। वर्सा मिलना है शिवबाबा से। ब्रह्मा द्वारा तो ब्रह्माकुमार–कुमारी बनना पड़े। जब बी०के०के० बहन–भाई तो विकार में जा न सके। नहीं तो क्रिमिनल एसाल्ट हो जाए। तो पवित्र तो बनना पड़े ना। बाबा कितनी अच्छी रीति समझाते हैं। पवित्र बनने की कितनी युक्ति बताते हैं। स्त्री भी कहे बाबा, पुरुष भी कहे बाबा तो स्त्री–पुरुष का भान टूट जाएगा। उस अवस्था आने में भी टाइम लगता है। अभी जो मन्सा में संकल्प भी आते हैं, धीरे–2 वह सभी बंद हो जाएँगे। किसी को भी समझा सकते हो कि परमात्मा के बच्चे भाई–2 तो हो ही और फिर कहते हो आदम–बीबी द्वारा सृष्टि की स्थापना हुई तो सब उनकी सन्तान ठहरे तो भाई–बहन ठहरे ना। कुमारी और कुमार के लिए इतनी मेहनत नहीं है। जो सीढ़ी चढ़ गया तो उतरना पड़े ना। उतरने में मेहनत है। ऐसे नहीं कि दोनों को अलग–2 रहना है। नहीं, साथ में रहते अपनी जाँच करो कि आग तो नहीं लगती। नगन न होना है, फिर तो कम्पेनियन हो जाय।

सतयुग में कोई अपवित्र होते नहीं और वहाँ बच्चे का भी इंतजार होता नहीं। यहाँ तो बच्चे का इंतजार करते हैं। वहाँ तो समयानुसार सा० अपने आप होता है। मनुष्य तो कहते, यह कैसे हो सकता है? भला यहाँ के सम्पूर्ण विकारी कैसे समझ सकते कि वहाँ निर्विकारी होते हैं। वहाँ तो देह–अभिमान है नहीं। यहाँ तो देह–अभिमान रहता है ना। तो देह छोड़ने के लिए कितना रोदन करते हैं। वहाँ तो रोदन नहीं करते। वहाँ तो समय पर सा० होता है कि शरीर छोड़ जाय प्रिन्स बनना है। यहाँ भी तो तुम सा० करती हो ना कि तुम भविष्य में महारानी बनोगी। कृष्ण बालक गोद में देखती हैं। सा० से यह मालूम नहीं पड़ स(कता) कि सूर्यवंशी महारानी (बनेगी व चंद्रवंशी) महारानी बनेगी। सा० होता है मतलब महारानी बनेगी। यह बिल्कुल नई बातें हैं। इसलिए कहते हैं पहले बाप को तो पहचानो कि मैं कैसा हूँ, कितना लवली हूँ। लौकिक माँ–बाप तो लवली नहीं होते, वह तो सब दुख देते हैं। बाप कहते हैं कि जो सभी धर्मों की सकरीन में हूँ तो मैं कहता हूँ मुझे याद करो। कहते हैं ना त्वमेव मात च पिता... एक–2 बात में निश्चय बैठना चाहिए; परन्तु कोई न कोई बात में संशय आता है तो भाग जाते हैं; क्योंकि माया तो है ना, फिर राजाई पा न सके। इसलिए बाप को याद करना पड़े। कहते हैं मनमनाभव। बाप को याद करो। तो तुम आशुक ठहरे ना। यह है रूहानी आशुक–माशुक। यह तुम्हें पक्का कर लेना चाहिए कि हम आत्मा परमात्मा के आशुक हैं। कृष्ण तो सबका माशुक हो नहीं सकता। कृष्ण तो(को) थोड़े ही सब याद करते हैं। यह तो बाप कहते हैं माम् एकम् याद करो; क्योंकि मेरे पास आना है। नाटक पूरा होना है, घर जाना है तो घर ज़रूर याद पड़ेगा। हर एक बात की समझानी मुरली में मिलती रहती है तो नोट करनी चाहिए। बच्चे मुरली से नोट तो करते नहीं हैं, फिर बैठकर बाबा से वो ही बातें बाबा से पूछते हैं। मुख्य बात है आशुक और माशुक। सभी ..... आशुक हैं; क्योंकि वह ... भी परमात्मा को याद तो करते हैं ना। कहते हैं ना मेरा तो एक दूसरा न कोई, तो आशुक ठहरे ना। शास्त्रों में लिखा तो हुआ है ना। इन शास्त्र आदि को धर्म शास्त्र नहीं कहेंगे। धर्म शास्त्र हैं ही चार। अच्छा, अगर कोई धर्म शास्त्र भी पढ़े तो भी प्राप्ति नहीं है। पुण्य आत्मा नहीं बनते, बल्कि और ही गिरते रहते। इसलिए कहते हैं भक्तिमार्ग दुर्गति मार्ग है। इस समय भक्ति का अन्त है। फाल ऑफ पम्पियाँ पिक्चर है ना। तो जो भक्ति का आरम्भ है उसका अब अन्त है। सतयुग में कोई भक्ति थोड़े ही होगी। भक्ति तो द्वापर–कलियुग में होती है। तुम बच्चे यह नई–2 बातें सुनते हो; परन्तु सुनते–2 माया का थप्पड़ लग जाता है। रावण कोई कम थोड़े ही है। बाप भी सर्वशक्तिवान है तो माया भी सर्वशक्तिवान है। आधा कल्प इसका राज्य चलता है। तो अब बाप कहते हैं 5 विकारों का दान दो तो छूटे ग्रहण। आधा कल्प जो माया में रहे तो एकदम तो छूटता भी नहीं है। तो कई दान देकर फिर वापिस ले लेते हैं। तो उसके लिए लिखा है चण्डाल का जन्म लिया है। पैसों की बात नहीं, पर विकारों की बात है। साधू–सन्यासी तो पैसे के लिए कि दान देकर वापिस न लेना चाहिए इसलिए कि इसमें उनकी कमाई होती है। वह तो हैड आई विन, टेल यू लूस। टेल यू लूस मुआफिक करते हैं। अगर सन्यासियों पास जाय उनको कहो कि अगर बच्चा चाहिए कहेंगे कि हमारी आशीर्वाद से हो जाएगा। अगर बच्चा हो गया तो कहेंगे हमने दिया। मर गया तो कहेंगे भावी। अगर एक को बच्चा हो, एक का इमान बैठ गया तो बहुतों का बैठ जाएगा। ऐसे ही इनकी वृद्धि होती जाती। एक तरफ अपनी महिमा करते, दूसरे तरफ कहते भावी। शास्त्रों में भी है ना जो अपन को ईश्वर कहलावे अपनी पूजा कराते हैं उनका नाम हिरण्यकश्यप है। कहते हैं कि स्तम्भ से परमात्मा निकला और हिरण्यकश्यप का संहार किया। अब भला स्तम्भ से परमात्मा कैसे निकलेगा। मनुष्य इन बातों को समझते नहीं। अगर कहो तो बिगड़ पड़ते हैं कि यह गाली देती हैं। हम गाली नहीं देते, यह तो शास्त्रों में तो लिखा है हिरण्यकश्यप।

तुम इस समय अननोन वारिअर्स हो। वे जो अननोन वारिअर्स होते हैं तो उनका यादगार बनाते हैं और बड़े–2 जाते हैं तो कहते हैं सोलजर्स पर फूल चढ़ाओ। अरे, जिनका पता ही नहीं उनका फिर यादगार कैसे बनेगा! अभी तुम अननोन हो, तुमको कोई जानते नहीं। फिर तुम वैरी वैल नोन बनते हो अर्थात् तुम्हारे मन्दिर बनते हैं। अभी तुम गुप्त में ही राम राज्य स्थापन कर रहे हो। वे तो कहते हैं गाँधी राम राज्य स्थापन करेंगे। यह भी झूठ, राम राज्य गाँधी कैसे स्थापन करेंगे। फिर एक तरफ तो गीता हाथ में उठाई और फिर कहते थे कि रघुपति राघव... तो हर बात में झूठ बोलते (रहते। कहते हैं न) (भेड़) का मुँह काला। जो बोलते सो झूठ ही झूठ। जब सत परमात्मा आवे तभी तो सच बोले ना। ऐसा मुँह काला किसने किया? रिढ़ किसने बनाया (भेड़)? (रावण) ने। कितनी रिढ कुसती अर्थात कत्लाम होती हैं अर्थात् काम कटारी से एक/दो को कत्लेआम करते हैं। तो यह मनुष्य रूप में भेड़ी हैं। कहते हैं कुत्ते का बच्चा, सूअर का बच्चा। तो जानवर की तरह है ना। माथा कौन टेकते हैं? भेड़िया। मुसलमानों की ईद में देखो रंग–बिरंगे कपड़ों वाले माथा नीचे कर नमाज पढ़ते हैं। अगर कोई उस समय देखे तो ऐसा लगता है जैसे भेड़ियों का झुण्ड बैठा हो। अगर कोई उनका फोटो देखे तो कोई नहीं कहेगा कि यह मनुष्य हैं। भेड़ियों का झुण्ड दिखाई पड़ता है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चे। सिकीलधे बने हो ना। 5000 (साल) के बाद मिले हो। किसी का बच्चा गुम हो जाय तो बाबा–2 कहते हैं ना। तो अभी (विनाश) होता है और तुम गुम हो जाते हो अर्थात बाप से बिछुड़ जाते हो फिर कल्प बाद (मिलते) हो। किसी का बच्चा गुम हो जाए फिर कुछ समय बाद मिले तो कितना बच्चे पर माँ–बाप का प्यार रहता है। वह तो अच्छा 5–10 वर्ष बाद मिलते हैं तो भी खुश रहते हैं। हम तो देखो 5000 वर्ष के बाद (मिलते) हैं तो (बाप का) प्यार रहता है। आधा कल्प तुम सुख भोगते हो फिर पीछे धीरे–2 दुखी हो जाते हो। सन्यासी कहते हैं ना सुख कागविष्टा समान है। वे भी विकार के लिए कहते हैं कि विकार कौवे की वीठ समान ज़हर है। कहते हैं ना असंख चोर। तो नानक ने भी कहा है मूत पलीती कपड़ धो। तो कौन धोएगा? वह एक परमात्मा, जिसकी महिमा है एको ओंकार... सिक्ख लोग गाते हैं और खुद देखो विकारी के विकारी बैठे रहते हैं। यह है सारी ठगी। अच्छा, मात–पिता, बापदादा का मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग।